पतन की पराकाष्ठा

आज देश में नित नये भगवान् वा धर्मगुरु यौन अपराध, हिंसा, देशद्रोह, ठगी आदि में संलिप्त होते पकड़े जा रहे हैं। काम के भूखे ये भेड़िये स्वयं को ईश्वर का अवतार बताकर महिलाओं व कन्याओं को अपने चंगुल में फंसाते देखे जाते हैं। देश में साधुओं, विद्वानों व ब्रह्मचारियों के प्रति अविश्वास गहराता जा रहा है। बड़े शोक व जुगुप्सा का विषय है कि जो धर्मोपदेशक ब्राह्मण राष्ट्र का मस्तक माना जाता था, वही आज नरपिशाच के रूप में विश्वभर में हिन्दुओं व भारतवर्ष को कलंकित करने का पाप कर रहा है। इससे अनेक राष्ट्रविरोधी व हिन्दू विरोधी कथित प्रबुद्ध महानुभाव सम्पूर्ण धर्म को बदनाम करने के लिए प्रोत्साहित हो रहे हैं, तो कुछ अन्य कथित धर्मगुरु निर्लज्जतापूर्वक इन कथित पापी स्वयंभू भगवानों के पक्ष में खड़े दिखाई देते तथा जांच एजेंसियों को हिन्दू विरोधी भी घोषित करने में संकोच नहीं करते।

दुर्भाग्य से कोई इस गम्भीर समस्या के कारण पर विचार नहीं करना चाहता, तब निवारण कैसे हो? वस्तुतः सत्य सनातन वैदिक धर्म की मर्यादाओं की जो व्याख्या आधुनिक युग में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश में की, उसकी उपेक्षा इस देश व हिन्दू जाति के लिए ही नहीं अपितु विश्वभर के लिए त्रास उत्पन्न कर रही है। महर्षि दयानन्द ने भगवत्पाद महर्षि ब्रह्मा जी से लेकर महर्षि जैमिनी के वेदोक्त विचारों के आधार पर कहा था-

१. कन्या गुरुकुल (आश्रम) में पांच वर्ष का बालक तथा बालकों के गुरुकुल में पांच वर्ष की कन्या भी प्रवेश न करे अर्थात् विद्या पूर्ण होने से पूर्व बालक व बालिकाओं का परस्पर दर्शन भी सर्वथा निषिद्ध था।
२. पुरुष साधु किसी महिला से चरणस्पर्श न करावे और महिला साध्वी कभी पुरुष का स्पर्श न करे और न परस्पर भाषण वा अध्ययन-अध्यापन ही करें।
३. सभी विद्या प्रेमियों को भगवान् मनु के अनुसार मांस, मदिरा, भांगा, गांजा धूम्रपान आदि तो दूर प्याज, लहसुन, मिर्च, मसाले आदि भी खाना निषिद्ध था।
४. श्रंगारी, अश्लील गीत, वादन, दर्शन सर्वथा निषिद्ध था।
५. किसी स्त्री को परपुरुष के साथ यौन सम्बन्ध बनाने पर सार्वजनिक रूप से जिन्दा कुत्तों से कटवाकर मरवा दे तथा पुरुष को परस्त्री से यौन सम्बन्ध बनाने पर सार्वजनिक रूप से जिन्दा जलाने के कठोर दण्ड का प्रावधान था।
६. भगवान् मनु के अनुसार समान अपराध करने पर भी ब्राह्मण (धर्मोपदेशक वा अध्यापक) को शूद्र (श्रमिक) की अपेक्षा चौसठ गुने दण्ड का विधान था।
७. ब्राह्मण (साधु, धर्मोपदेश) सर्वस्व त्यागी अपरिग्रही होता था तथा संन्यासी के लिए एक स्थान पर निवास करने तथा धनसंग्रह आदि करने का सर्वथा निषेध था।

दुर्भाग्य से आज वेदविरुद्ध ईश्वर के अवतार व मूर्तिपूजन की मिथ्या धारणा ने चालाक व धूर्त लोगों को स्वयं को अवतार घोषित करने का एक मार्ग दे दिया है। उन अवतारों पर कोई पाप नहीं लगता, यह भी घूंटी भोली-भाली जनता को पिलाई गयी। इसकी पुष्टि के लिये मध्यकाल में भगवान् शिव, भगवान् विष्णु, देवराज इन्द्र एवं भगवान् कृष्ण जैसे महामानवों के द्वारा यौन लीलाओं को अध्यात्म के नाम पर मिथ्या प्रचारित करने का पाप किया गया। आज धर्म के नाम पर स्वतंत्रता इस देश व विश्व को सत्यधर्म से दूर ले जाकर नाना भ्रष्ट व मिथ्या मार्गों पर धकेल रही तथा मानवता को बांट रही है।

आज ये कथित भगवान् महिलाओं को ही शिष्या बनाने का पाप करते हैं। महिलाएं भी उन्हें भगवान् मानकर उनके जाल में ऐसी फंस जाती हैं कि वापिस लौटना कठिन हो जाता है। अनेक पुरुष आचार्य वा संन्यासी कन्या गुरुकुल चला रहे हैं, तो कोई कन्याओं व युवतियों को साधना, योग सिखा रहे हैं। उनसे आलिंगन करना, सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद देना, चरण स्पर्श कराना, एकान्त में वार्तालाप करना सामान्य बात है। कथित साधु हजारों करोड़ कमाने का लक्ष्य लेकर धर्मभ्रष्ट हो रहे हैं। उस पर सोशल मीडिया से जुड़े रहकर ये नाना पापलीलाएं सीख रहे हैं।

यदि हम यह जान लेते कि ईश्वर कभी अवतार नहीं लेता तथा हम सत्यार्थ प्रकाश व वेद की शिक्षाएं मान लेते, तब यह घोर पतन नहीं होता। शासन को चाहिए कि देश के सभी आश्रमों, गुरुकुलों, मस्जिदों, मदरसों, चर्चों, गुरुद्वारों एवं ब्रह्मचारी व कुमारी कहलाने वाले प्रचारकों वा प्रचारिकाओं की सख्त जांच करे। आकस्मिक छापे मारे जाएं। विशेष न्यायालय गठित कर इन सब अपराधियों को त्वरित दण्ड मिले। खुले में मृत्युदण्ड ही सबसे अच्छा दण्ड होगा। जनता को अंधविश्वास, गुरुडम, अवतारवाद के प्रति जागरूक किया जाये एवं धर्म का सत्य वैज्ञानिक वैदिक स्वरूप सम्मुख लाया जाये, तभी देश बच सकता है अन्यथा विनाश को रोकना सम्भव नहीं। शोक है कि एक ओर पाश्चात्य कुसभ्यता हमारी संस्कृति को निगल रही है तो इधर ये संस्कृति के ठेकेदार पापगर्त में देश को धकेल रहे हैं। राजनेता वोटों के लालच में इन कथित धर्मगुरुओं को प्रश्रय दे रहे हैं। न्याय प्रक्रिया कच्छप गति से चलने से अपराधियों को उचित दण्ड नहीं मिल पाता। ईश्वर सबको सुमति दे।